#४२: व्यक्ति में पूर्णता

दिनांक -१५/१२/२०११

व्यक्ति में समझदारी ही पूर्णता का स्वरूप है | समझदारी का स्वरूप विकसित चेतना ही है जो मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में गण्य होता है | अभी मानव जीव चेतना में व्यवहार प्रियाप्रिय, हिताहित, लाभालाभ आधारित होता है | न्याय धर्म सत्य जो कुछ भी रहता है, भ्रमित मान्यता अथवा कल्पना ही रहता है | फलस्वरूप आहार निद्रा भय एवं मैथुन ही विषय प्रवृत्ति रहता है | पाँचों संवेदनाओं के अनुकूलता प्रतिकूलता को प्राथमिकता देता है | फलस्वरूप लाभ की कामना रहती है | यही भोगोन्माद, कामोन्माद, लाभोंनमाद रूप में प्रकट है | इस स्थिति में एषणा जो कुछ भी है, विकृत अर्थात आवेश युक्त रहता है | यही ४.५ क्रिया में जीना जीव चेतना है | अभी तक मानव जो कुछ भी अच्छा, बुरा कर पाया, सब इसी जीव चेतना में ही गण्य है | इसी में अधिकाँश स्वार्थ, परार्थ, परमार्थ लक्षित मानसिकता, ज्ञानी, अज्ञानी, विज्ञानी कहलाने वाले मनुष्य सिमट गया|

जबकि, आचरण के रूप में हर मानव विकसित चेतना में जीने की स्थिति में मानव, देव मानव, दिव्य मानव के रूप में ही होता है | आचरण सहज प्रमाण के रूप में मानव चेतना कहलाता है | यह व्यवहार एवं विचार न्याय सम्मत होने से होता है | न्यायान्याय धर्माधर्म, सत्यासत्य के साक्षात्कार ज्ञान के बिना यह संभव नहीं है | यही चिंतन क्रिया की महिमा है | अवधारणा होना ही इसका लक्षण है | अभी मानव अपने ही चित्रण को, कल्पना को, तर्क को, आदर्श आचरण को अवधारणा मान लेता है | यह भी एक भ्रम है | जबकि, साक्षात्कार के बिना अवधारणा होता ही नहीं | साक्षात्कार स्वयं अस्तित्व में वस्तु का ज्ञान है, स्वीकृति है | मनन के बिना साक्षात्कार होता नहीं | श्रवण के बिना मनन होता नहीं | शास्त्राध्ययन के बिना श्रवण होता नहीं | श्रवण में स्मरण एवं तर्क की संतुष्टि, मनन में इच्छा एवं प्रवृत्ति की गुणात्मक परिवर्तन एवं संतुष्टि, साक्षात्कार में जिज्ञासा की संतुष्टि होती है | यह तीव्र इच्छा विधि से सफल होता है | फलस्वरूप साक्षात्कार क्रम में अवधारणा की प्राप्ति से ही ज्ञान एवं आचरण में संयंत होना होता है | यह मानवीयतापूर्ण जीवन रूपी विकसित चेतना का ज्ञान है | यही गुणात्मक परिवर्तन पूर्वक संक्रमण है | यह जीवन ज्ञान विधि से संभव हो जाता है |

विचार रूप में जब जीता है, प्रमाण प्रस्तुत करता है तब देव चेतना का ज्ञान कहलाता है | इनमें धर्म प्रधान सम्मत दृष्टि का होना पाया जाता है | यही बोध होने का सार्थकता है | पूर्ण बोध होने से ही निर्भ्रान्ति एवं देव चेतना का ज्ञान है | अन्यथा भ्रान्ताभ्रांत कहलाता है | पूर्ण बोध होना जीवन बोध एवं जागृति का स्वरूप होना है | इसके पूर्व में अपूर्ण बोध एवं अर्ध जागृति रहता है | इसके पहले जीवन चेतना एवं भ्रम कहलाता है |

बोध होने के बाद अनुभव होने पर दिव्य चेतना का ज्ञान होता है | यही संक्रमण गंतव्य है | इसके बाद प्रमाणित करने का क्रम है | इस ढंग से तीनों चेतना का ज्ञान अनुभव में समाया रहता है | पुन: अनुभवमूलक विधि से जीने में क्रमश: मानव, देव, दिव्य मानवीयता प्रमाणित होता है | इस ढंग से अध्ययन विधि से विकसित चेतना का ज्ञान एवं अनुभव मूलक प्रमाण होना समझ में आता है | अनुभव मूलक विधि से सत्य प्रधान विधि से जीना बनता है | यही दिव्य चेतना है |

यह अनुभव, विचार, व्यवहार प्रमाण के बिना सम्भव नहीं है | अभी तक अर्थात अत्याधुनिक युग तक मानव ने विचार करने में विश्वास किया है | अभी तक का विचार सुविधा- संग्रह के लक्ष्य में ही है | जिसका तृप्ति बिंदु मिलना नहीं है | विगत पांच सौ वर्ष के किये गये करतूत से पता चलता है कि किसी एक को भी तृप्ति बिंदु मिला नहीं | और चाहिए और चाहिए में ही रहता है | इसमें हाहाकार के अलावा कुछ होता नहीं | हाहाकार मानव का मंजिल नहीं है | मानव का मंजिल विकसित चेतना विधि से पता चला है जो समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व ही है | समझदारी से समाधान होता है जो विकल्प विधि से चेतना विकास मूल्य शिक्षा के रूप में सम्पन्न होता है | इस क्रम में हर मानव तृप्ति बिंदु पाने की सम्भावना है | अतृप्त आदमी अपराध करने से बाज नहीं आता है | इसका गवाही धरती बीमार होने, प्रदूषण छा जाने से पता चलता है | इस कृत्य में मानव के अलावा किसी का हाथ नहीं है | मानव ही जंगल एवं खनिज का शोषण करने, उपयोग करने से यह स्थिति बनी है | मानव समझदार होने की स्थिति में परम्परा का पक्षधर होता है |

परम्परा का पक्षधर होने का मतलब, मानव अपने सन्तान को समझदार बनाने के अर्थ में, हर पीढ़ी विगत से जो सीखता है, उसके आगे सोचता है | यही अपराध क्रम में हुआ है, यही जागृति क्रम में भी होगा | जागृति क्रम का परिशीलन हो चुका है | भले ही एक ही व्यक्ति परिशीलन किया है | इसी आधार पर हर व्यक्ति परिशीलन करने के योग्य है | इसे समझा है, तभी चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव रखा है जिसका आपूर्ति के अर्थ में मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद अथवा अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के आधार पर प्रस्तुत किया है | इन घटनाओं से पता लगता है कि जो परम्परा के लिये आवश्यक है उसका अनुसंधान होकर रहेगा | शोध और अनुसंधान ही प्रगति का आधार है | इसी क्रम में अभी तक जितने भी दुर्घटनाएं हुई उसमें मानव जात का योगदान इसी विधि से हुआ | शोध और अनुसंधान मानव सहज प्रवृत्ति है | मूल्यांकन विधि से शोध होता है | मूल्यांकन हर व्यक्ति करता ही है | कमी का पूर्ति के लिये अनुसंधान होता है | इसी क्रम में लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद शिक्षा स्थापित हुई | इसे प्रलोभनवश मानव जात अपनाया है | अब मानव जात को यह विदित होने का दिन आया है कि मानव जात के कार्य- व्यवहार से धरती बीमार हो गई है | इससे छूटने के लिये शोध कार्य होना सहज है | ऐसे शोध कार्य प्रत्येक व्यक्ति से सम्पन्न होगा | इसी आशय से मानव चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है |

मानव जात सदा सदा श्रेष्ठता का पक्षधर है | इसकी स्वीकृति हर मानव में समायी हुई है | इस तथ्य के आशय में प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ है | प्रस्ताव के अनुसार जीने का परीक्षण हो चुका है | अब मानव परम्परा में अनुभव प्रमाण विधि से जुड़ना आवश्यक हो गया है | अनुभवमूलक विधि से मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित करेगा | अनुभव के आधार पर किया गया विचार विधि से नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य को प्रमाणित करेगा | ऐसे विचार सम्मत व्यवहार कार्य में अथवा ऐसा व्यवहार कार्य को स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष दयपूर्ण कार्य- व्यवहार के रूप में प्रस्तुत करेगा | यही निर्दोष, निरुपद्रव आदमी का वर्चस्व है | इसे हर व्यक्ति पहचान सकता है, स्वीकार सकता है | ये सभी बिन्दुएँ स्वीकारने के रूप में सहमति हो पाती है | ये भी सर्वेक्षण सामान्य रूप में किया गया है | इसे हर व्यक्ति सर्वेक्षण कर सकता है | सर्वेक्षण में निरीक्षण, परीक्षण समाया रहता है |

अभी तक मानव परंपरा का छूटा हुआ मुद्दा यही है कि अनुभव प्रमाण विधि से जीने का निर्णय नहीं हुआ | इसे सार्थक बनाना ही विकल्पात्मक प्रस्ताव का स्वरूप है | इन सभी विधाओं से सोचने पर यही तैय होता है कि मानव को अपनी समझदारी का विकसित चेतना में परिवर्तित होना आवश्यक हो गया है | विकसित चेतना, शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण होने

का उपाय है | इसमें हर व्यक्ति का अधिकार है | ऐसे शिक्षा कार्य में शिक्षित होने में हर व्यक्ति का जिम्मेदारी होना, भागीदारी होना, प्रमाण होना एक सहज प्रक्रिया है | इन्हीं सहज प्रक्रिया के अर्थ में प्रस्ताव प्रस्तुत है | इतना ही नहीं है, इसको समझने, जीने, प्रमाणित करने, परम्परा बनाने के अर्थ में कई लोग जूझ चुके हैं | हर जुझारू में यह देखने को मिलता है कि अपने तन मन धन से जुड़ते हैं | ऐसा देखने पर लगता है संसार सुधरने के पक्ष में है न कि बिगड़ने के | अभी तक का वैज्ञानिक सोच यही है कि धरती को खाली करना, चन्द्र लोक पहुंचना, मंगल लोक पहुंचना और कोई लोक को पता लगा लेना; वहाँ जाकर यही कुकर्मों को करते रहना | कुकर्मों का निष्कर्ष लाभोन्मादी, कामोन्मादी, भोगोन्मादी शिक्षा तथा सुविधा-संग्रहवादी प्रवृत्ति ही है | सहमति का स्वरूप में सामरिक तंत्र को अपनाए रहना तथा समर्थ का कोई दोष नहीं है ऐसा मान लिया गया है | समर्थता के बारे में पैसा और पद, इसके और पहले बल और पद, उसके पहले रूप और पद रहाअभी तक का निष्कर्ष यही है | यह जंगल युग से बनी हुई इतिहास के आधार पर आँकलन किया जाता है | अतएव मनुष्य का आकांक्षा रुपी प्रवृत्तियों को पहचाना गया | इसके लिये तीन आधार विकल्प में बताया है कि मनुष्य जन्म से ही न्याय का याचक, सही कार्य व्यवहार करने का इच्छुक तथा सत्य वक्ता होता है | यह हर मानव सन्तान में पाया जाने वाला सर्वेक्षण है | इसे कहीं भी देखें इस भाव को, इस प्रवृत्ति को बचपन से पाया जाता है | इसके आपूर्ति के लिये अर्थात इसके विस्तृत उत्तर रुपी शिक्षा के लिये विकल्पात्मक शिक्षा का प्रस्ताव है, कटिबद्धता है, अथवा संकल्पित है | इसका औचित्यता को जाँचने का अधिकार हर मानव रखता है | यही व्यक्ति में पूर्णता का अर्थ के रूप में समीचीन/ समाया? है | व्यक्ति में पूर्णता का कार्य रूप, वर्तमान रूप अथवा प्रमाण रूप सर्वतोमुखी समाधान ही है | यह विकल्पात्मक समझदारी से आता है | श्रम से समृद्धि होती है | इसी को मानव में सम्पूर्णता कहते हैं | व्यक्ति में पूर्णता समाधान, ऐसे व्यक्तियों के परिवार में समाधान, समृद्धि होना आवश्यक है |

सर्वशुभ हो! जय हो ! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)